B.A. (Hons) Philosophy 10.7.20

III paper

ईश्वर एवं विश्व सम्बन्धी सिद्धान्त

(सर्वेश्वरवाद)

सर्वेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर ही एक सत् है तथा सब कुछ ईश्वर है। ईश्वर को एक असीम, विश्व व्यापी एवं विश्वातीत तथा व्यक्तित्व रहित माना गया है। यह अनेकेश्वरवाद से बिल्कुल भिन्न है। अनेकेश्वरवाद अनेक ईश्वर को मानता है, परन्तु सर्वेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर एक है। यह अनेकेश्वरवाद का विरोध करता है और ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करता है।

सर्वेश्वरवाद के समर्थक के रूप में स्पीनोजा और शंकराचार्य आते हैं। स्पीनोजा के दृष्टि में मूल सत्ता द्रव्य है जो असीम, सर्वव्यापक तथा व्यक्तित्वरहित है। द्रव्य में अनेक गुण हैं लेकिन मानव को अपूर्ण मानते हैं इसलिए यह उनके सभी गुणों को नहीं जान पाता है। ईश्वर और विश्व समानार्थक हैं। ईश्वर के बिना विश्व की कल्पना करना बेकार है। ईश्वर विश्वमय है वह सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है दोनों को एक दूसरे से अलग करना असम्भव है इसलिए इन्हें अभिन्न कहते हैं। स्पीनोजा ईश्वर को व्यक्तित्व रहित मानते हैं। क्योंकि इसमें कल्पना, इच्छा, संकल्प का अभाव रहता

और सत्य ही सत्य विश्व ईश्वर पर ही आश्रित है।
शंकर के अनुसार जगत और ब्रह्म में जो सम्बन्ध है वही सम्बन्ध विश्व तथा ईश्वर में है इस लिए शंकर के सिद्धान्त को एकत्ववादी सर्वेश्वरवाद कहते हैं।

विश्व के लिए ईश्वर अनिवार्य है क्योंकि वही विश्व का आधार है। ईश्वर और विश्व का सम्बन्ध नित्य है और दोनों में आंगिक सम्बन्ध है। सर्वेश्वरवाद के अनुसार ईश्वर विश्व का उपादान कारण है जिस प्रकार मिट्टी घड़े में व्याप्त रहती है, ठीक उसी प्रकार ईश्वर विश्व में व्याप्त रहता है।

सर्वेश्वरवाद निमित्तवाद का समर्थक है ईश्वर अपने को विश्व के माध्यम से व्यक्त करता है सब विश्व के कण कण पर और देखते हैं विश्व के सभी पदार्थ ईश्वर के विवर्त कहे जाते हैं। सभी प्राणी ईश्वरमय हैं

सर्वेश्वरवाद के सिद्धान्त को वैज्ञानिक दृष्टि दोषपूर्ण भी माना जाता है क्योंकि बुद्धि का स्वभाव है अनेकता में एकता का दर्शन करना। और सर्वेश्वरवाद अनेकता को व्यावहारिक एकता के आधार पर करता है इसके अनुसार परम सत्ता एक है इस प्रकार इसमें धार्मिक जिज्ञासा भी सन्तुष्ट होती है